304
9irua
Udvar
2602 I

ॐनमःश्रीवज्रसत्त्वाय दिनंयक्षयादौ।गरुविक्ष्य
विघ्ननमारु।जूम्भिकस्तुदनं।कलगयिसुदन।कृगयिना
य।मरुकाल।जूलिधि।कलिनि।शीलक्षि।कृगकन।गिंधमा
रु।यक्षयक्षी।गागास।यूजा।महावलि।लाषवलि।सयवि
कनजादकावाय।सूर्योद्य।रुवूयादाद्य।जरूगलास।रुवून
मसकावयाय।ज्यरुन।यूद्यद्यानजादिन।वशुद्धावयूजा
वशुयद्वगयूजा।कूगषियगयन।नका।युका।जूरुष।रागुस्वा

नलकायावगं।लाकयावयूजा।दीगवनिकायवद्याय।
ज्ञागनसचादाव।यक्षुगवद्धय।धमनं।काय।जजमानंवि
या।स्थानयूजा।जायथक।गुवूमलु।धूनदाव।सिधलयू
जा।जजमननस्थानगनंकं।किकाय।नमस्कृत्यादि।मधु
लविसजना।सगस्यदका।काय।दशुत्रियाय।सियमाधि
जायगा।क्रूरज्ञादिन।यविधिक्रियाधूनदाव।जूम्भाक्रु
धि।ज्यधाकृधिधूनदाव।।गडुंलिवज्रयस्यंहुरुचाम

।लघुमंत्रंथ्याव।

यजिवायावा ॥ गन्धाष्टिछवन पवयाव कुरुमकुल लोंछव
लि स्वाहा मन्त्रजाय ॥ थय ॥ वगलिवाक्रियायाय ॥ गरुडासिमवहगरु
डियादिकादि यजार्चयाय ॥ कवलिहाथयजा ॥ यजमानस्यं गेह
सिंयवर्धियर्क वनमीनयक्षाय ॥ थीयम थीयनगयावा ॥ गा
वजसत्वयागमानसावाय ॥ थैकठिनसावगवेषु थजानवृ
पयक्षिणोद्विणयष्टिका लायना कामनसक्षाय सोवक्षीदि
पृथिवजनवेक्षाय ॥ गरुलिसत्वानगत्वीयावनो ॥ उगिरिंकु का

वजुंवृद्धरूनामगं उँ धर्मे धातुस्वरावंविद्या रंडकुवायायनसमन्वा
विशावा ॥ सहदीजमयूषानीयगथगणादि ॥ कलशजलं जूगिविय
वजाङ्कुशादिमुद्रा ॥ ॥ जहोदि ॥ यैलाद्यैरु ॥ ॥ कूशमालाय
ऊसूतका वजयहजाय ॥ ॥ भावरमन्त्र ॥ ॥ उँ नमारुगवकवेया
वलयैरुगवाजाय सुश्मगणायादिगवसम्यस्कवृक्षाय ॥ गन्धाया
उँ भूरुरु२ गमरु गमयरु भमरु दाकरु यमालाय निवाकूरु निर्वीत्व
यभावाभिमलागजरु सत्ववृद्धाधिरुस्थानधिष्ठिमस्वाहा ॥ जूननमकुव
सयूष्वि धजमवकविगणिवावैयविजया ॥ रुविनिवाकरुविमि

ग्र॥ सप्तत्यदकाग्र॥ यूनजाय स्वानमाला ॐ ज्ञाय स्वाहा॥ म
न्त्र॥ ॐ सर्वयक्षराग मिश्रियनदीयक ॐ र्यमभाङ्गरेस्वाहा॥ स्वय
मन्त्र॥ ॐ ज्ञस्वानमालाग ॐ जगमियनत्रय॥ लोहाभिलक्ष॥ यूँ
ॐ सूँ रुलादिक्ष ग इन्द्रीक्ष्द॥ वज्रसत्वयकाय॥ १०८ मन्त्र॥ ॐ
ज्रीः वज्रीलवहूँ ठ मिश्र ॐ र्वं हूँ स्वाहा॥ ॐ स्युमिश्रियवज्रस्वा
हा॥ रुस ग्रयावस्यु स्वाहस्त्रीनवाक्षन॥ वज्रनक्ष॥ र
क्षीनलेय॥ वज्रमिगलाङ्ग नन्दमश्वेस्त्रयके॥ यस्य

वायके॥ यज्ञ्ञमालयस्यके॥ यगायषञ्छवेयिन॥ दक्षय
ग्रयक्र धीवलाव॥ केलावयाव सियदक्षियाय॥ ज्ञाभ
नसस्थान॥ यज्ञ्ञस्यूजाङ्ग लोयिवलामव ज्ञक्षण धवघा
व जाङ्ग ग्नियिय॥ दवगाङ्गनियिय॥ स्वाव ङ॥ मलावलि
यिय॥ कञ्चवनियिय॥ वाक्र यागंग्राहुनि॥ सत्वयाग ज्ञाङ्ग
नि॥ ज्ञधियनियागं ज्ञाहुनि॥ ज्ञङ्गमानयागं ज्ञाहुनि॥ ॥ ॥ ये
मलावलिङ्काय॥ ॥ यूस्त्रयोय॥ ॥ स्वथनेयूजाङ्काय॥

खानदनकोऽछ्रयूजा॰॥ऋत्विक्॰॥ऋत्विवाद॰॥स
ग्वन॰॥सबाहुमि॰॥कमाय॰॥विजेनर॥०॥ॐनिदि
नक्षयाद॰गरुत्मिक्षयसमायै॥३९॥अथयवना
वरकामाग्नियूजायजावसुधियूजायायेमाव॥३९॥
शुरमसुसवदावयकस्य॥०॥अ॰र॥॥

१ ॐ मूयवावादकस्य॥ ॐ मूयादि॥ ॐ यु
ग्निक्लिनासिदनाथनदायालोकयालकाय ॐ ब्रून्द्रायालोकयालादि
यूङ्घोयावकुदवमारयागिध्मेयागयोःसवस्तोवलसवमास्मा
यावद्वन्द्राकमदित्यास्काग्नीवाचयूमाङ्कया॥ ॐ क्लिनासिदवघ
सूयुग्निश्रुवस्त्रियूरसानिधंपृथियघ्नयऽमानलुवध्य सा
घन्नाम्नुग्निवदानिमाघन्नाम्नुवबन्द्रुकुषादा॰न्नाम्नुसवलोकानी
घन्नायास्काग्नत्थेवबध्यऽमानःसरुस्यायंपऽछूपूसवान्धवा॰

वक्तुसर्व्वदावानीदंग्रक्षयेनमाम्भुक ॥ यावक्रूरयक्रस्थोद्वावयू
वसूनां ॥ कावक्षवसदसायिकक्लीविवयूवसत ॥ वाक्कृ
ल्लियेयीनाजेत्यादि ॥ ॥ ॐनिष्किववाक्कृ ॥ य ॐ ॥
गोलाजक्षवस्कोपन्नरसायूवीदिउल्लवाक्कांवाकूल्लिंलास
वक्कासकुक्षाधीवीदावाल्लपूष्याक्कयूयवाडाक्षिषक्का
ॐनिधावस्कीयेन्नवविधि ॥ ८

ख्यः चूनिकावादत ॥ पूर्व्वटस्वविक्षर्न ॥ वाक्कविल्ल
ष ः ॥ ॐ ॐ ख्यवावाद ॥ ॐ ॐ ख्योधि ॥ ॐ चूनिकस्वमद्दक्षर्न
ङ्खलिंगदविस्वयं ॥ प्रासादाद्वस्किंगंधर्व्वस्कानचूपन
ग्रास्तुग ॥ नास्तुक्षाक्किजयीनाजाकासूखिनःसूयुक्तास्तुथा ॥
स्वकूलवृद्धिकानिन्नासूरिस्काभाग्यमवव ॥ यथाखिदः
नक्षाङ्खलियक्षांचूनिस्कायांखिवः ॥ खिवस्वचूनिस्वमयूध्वीसव

कामुरुचयदा॥ ॐ निविघ्नेषः॥ ॐ निशादनकासुग्
धासीवादं॥ ध्वजावंधकं॥ ॐ नयष्वादिकूरिषकं॥ ॐ कि
श्चकलशाकिषकं॥ ॐ लक्षिविकिष्टा॥ ॐ कि कूलिकाना
दनविघिसमाकं॥१

१ ध्वयालाहनाश्लत्दाक॥ यासादाहिगला॥ ध्वयाश्चार्यदव

ॐ कलमीयकमानन गरुनिशिस्यिन॥ ॐ किवरुशवाक॥ ॐ मधवा
वाद॥ ॐ मशादि॥ यकमानस्यशीर मूमुकशिवप्रासादापनिस्थ
कवगध्वशाशारुनः ॐ किशारुवसु॥ ॐ युनिकिशामिदवास
यनिश्चारुवस्वर्यसानिधीयुनियशनकयकमानाभुवध्वय॥
ग्नाभुद्विपदनिश्चोगन्नाभुवचयुष्पदगन्नाभुसर्वलोका
नीगन्नाशाश्लीतस्थेवव॥ यकमानस्यशार्यपशुयजसवाश्व
वाशरुन्धुसर्वदेवानीध्वदगध्वार्यनमाभुक॥ रुगवान्दव

देवस्य प्रासादयन्निनि क्षिरं स्याद्धवसमानाणसुवर्णकलशः
कायमानन्दबुद्धयसंश्रायुतनयनसाटिकयामिमसादकोर
अकोटिदासदासश्च यावत्कोटिध्वजी नाकासुरिक्कसुप्रकासु
थाकुमलुकयुदानन्नयूथीकाटिकुंधुकी यावत्कुमयानस्था
धकषुवरवक्षिनि। यावद्वषसहस्राधिशिवलोकमहीयुक॥
धुरासाहुनवाक॥ उँ यावच्चन्द्रदिवाकरयुरुकयाव्यामोक्षन

निखसायावत्सवहिमावत्यरुगयक्षियथीगलं कैलाधिगिरि
कायनिःसुवमनयावत्तदीसागवाःस्वर्गसकलंधुरीनिवृय
मीयावच्चिवेनिष्ठु॥यावच्चन्द्रस्यसूर्यस्यमेदिनीसफसागवाः।
यावदाकाशगंगेभवतावत्त्वंवसिष्यारुव॥यावन्नुमिमालिंग
देवियावत्सवसमानवःमावद्यगेसकलाधिकलोकिवयुरुव
दुग॥उँसिष्यारुवक्षिग॥उँयातेनीयावागथिवीयावच्चसफ
सिधंतावित्तसिष्यारुव।यावत्कुमिन्दनगहमूजोगंकाम्य

2602 I

ॐ गिरिजिक्षुभ्मलन विद्विसमाय ॥ ॐ ॥ शुरु ॥ ॐ ॥

लगं लक्षमंडलंधनं ग्रहनक्षत्रं वायकं स्वा
नगनकं थलिव मूरिमक आशिवाद गरुवन
गकलस्यसमयग्रहगकास्यं थलिव आचार्योसं
क्रमायघ्न ० उंवजसल्ल समयमन्यायय गाथ
यायय मूलिनगान शयासावयनं वजव यंवसंग
कावान देवस्वं विसर्जनयाय गाथा कृगावस्व

[illegible] सक्का कासक्कनविनन सानक्क॥स्वावकडायक॥२

सल्लार्थ ग्यादि सामनगन विक्कायमौं यगनस्य
मात्र ॥ उं ॥ थलिव क्नगकन सिधम्र० क्लाय
न्यागय थक्काडि क्लाय क्लग भाक्का क्लाय वलि
क्लाय ॥ ६ॐ ॥ थलिव डक्कास्वायाव्न दवस्वेवि
क्लावकं लें लेसग्य [illegible] यसग्लं ॥ ० ॥ यथासंस्व
वथी समयावकं ॥ ० ॥ कवकं क्लायमाल ॥ ०

[illegible] लं [illegible] गथसं गासगास सासखिनखिश यलयतिवाय॥
लें डाक्षावसं गय॥ यजा॥

लिव ॥ दवल्लं ॥ सिचमूनिस ॥ यिनषाग ॥ न्यागयास ॥ ध्
गंद ॥ पंचसूरकान ॥ यिन्नाव ॥ गाय ॥ जूरस ॥ ह्मास्रोल
स्वान ॥ पंचसूरका ॥ वैर्ज ॥ थूगजान्नाव ॥ दवसबीज ॥ मू
लमूण ॥ न ॥ नकविनकेन ॥ जययाय ॥ ॥ मन्त्र ॥ ॐ
हूँ ॐ ॐ हीरवँ ॥ थ ॥ मतधजय १०८ ॥ जयग्मन ॥ छा
य ॥ जजमान ॥ ग्यनजाँकेगे ॥ ग्यायरिस्यै ॥ घ०।

ना।

घाषयाद ॥ स्वस्तिवाकग्मथन ॥ दवसकेछ्सुंगयास्वान
इथने ॥ दवगातिछ्काका ॥ रावरय ॥ थलिव ॥ ॥ न्याग
यग्मयूजन ॥ दक्षिणा ॥ यज्ञेश्वयहाग्यूजा ॥ ॥ जूछ्वा ॥
स्यास्तुगि ॥ थलिव ॥ मस्तवलि ॥ विय ॥ विघ्नेनथ ॥
यविवाग्यूजा ॥ गवूसने ॥ दगुवाविविय ॥ गुरुयूजा ॥
दक्षस्ता ॥ ॐ ॥ थलिव ॥ जजमान ॥ धर्मनियोंसेक

जकजकिनी ॥ स्वाहा ॥ थलिवजूंस्वायसन ॥ सिसैंमाधि ॥
जायनो ॥ ॥ घ्य ॥ मूकर्षनसमूदिनैस ॥ कलमङ्ग ॥ मधि
स्वान ॥ पंथलिवं ॥ जजमाँस्यंग्मनजान ॥ गस्यभ्ययाय
गथम ॥ ० ॥ श्रीरगवनशोयेश्वरलावकविद्यावोंकंनमा
सुगे ॥ कण्डमिङ्गमिकनाथंजीर्ध्वेश्वावक्रियागुरु ॥ सर्व
सत्वाहिताथय ॥ युष्माकंयूजनायव ॥ ज्ञानामृतस्रावन

॥ विघ्नेंकरशस्मिन्निमि ॥ ॐ ॥ धकादिस्यनराजन
नलाजन ॥ श्लाम ॥ ॥ स्नान ॥ यंवामन ॥ क्रगवस्व
यागाघ ॥ यंवनथगगस ॥ स्नानवाय ॥ यज्ञायहारयूजा
यिवमूनिस यूजा धूनस्राव न्यागर्यंगयूजन ॥ ०
यिवेषामयूजन ॥ ~ ॥ थलिव ॥ जावाय्येयी न्यागयस
क्रगन्यागं ॥ ~ ० ॥ स्रावधायायविघ्नथं ॥ ॥ ० ॥ थन

रक्षणाय ॥ जिह्वेश्वरनयायविघ्ननाशाय ॥ ० ॥ नकुलाय
न्यायचंडादिनाथाय ॥ गरुडास्यगणेशाय ॥ कौमारी नवशक्ति
श्रीसत्यनखवल्लि लंबवल्लि महावल्लि इरावतिषोवल्लि
वाराहीजाद्यधूम्रादिषोडशकेभ्यनखरक्षाबंधाय ॥ ० ॥ न्याय
चंडेश्वरनीलोत्पलखड्गपंचवामुख इंद्रधनुर्धर शूल कपि
लसत्र ॥ पंचवस्त्र पंचगन्ध पंचाग्नि पंचवृद्धि पंच
वल्लिक. पंचगव्य पंचसूत्रका जूटबंधन ॥ पंचा

यशाखयूजा दवशागच्छ यागच्छ ॥ दिक्षिजा २ यूज
धविधि ॥ ० ॥ नकुलेशाय जजमान श्यामलासाधन
धियके ॥ धनलिवं शुक्लमंडल लंबवल्लि सिंधयूजा
धनलिवं शुक्लचंचलसन सामनसनं शीघ्रेश्वरया
चकाशा जीह्वेश्वरन यायधारन धनदगुलिधार्य
युगनेत्रसनधाय शुक्लसन स्वानकाय ॥ ० ॥ ॐनमस